# **माँ :** माधविकुट्टी

**सुनिता पी.वी.**
'Thiruvonam', Mathil P O, Kannur (Dist), Kerala, India

**प्रक्कथन**

**यह मलयालम कहानीकार माधविकुट्टी द्वारा लिखी गई मलयालम कहानी का हिन्दी अनुवाद है। इस कहानी का शीर्षक है 'माँ ' ('अम्मा')। प्रस्तुत कहानी प्रवासी जीवन बितानेवाले बेटे की माँ के एकांत जीवन पर आधारित है। इसमें बुजुर्ग माँ की मानसिक और शारीरिक यातनाओं को चित्रित किया गया है। इस कहानी की माँ वर्तमान समय में एकांत जीवन बितानेवाले बुजुर्गों का प्रतीक है।**

बीस पैसे की सब्जी खरीदकर लौटते उस बूढी को एक काली मेर्सिडस कार ने धकेल दिया। उसको लगा कि उसका दायाँ पाँव पिस गया है। लेकिन हाय ऐसे चिल्लाने को भी उसकी जीभ नहीं उठी । दर्द ने उसको उतना ही सुन्न कर दिया था।

कार एक फुफकार के साथ जल्दी भाग गयी। बिखरी हुई भिंडियों के बीच उस गली में एक टूटी हुई गुडिये की तरह वह बूढ़ी पड़ी रही । दर्द ने सभी अंगों को सुन्न कर दिया था । फिर भी सदा एक गाठा पानी बह रही वे आँखें सुन्न नहीं थीं । सफेद साड़ी में विकसित होते एक लाल वृत्त को वे आँखें देखती रहीं ।

एक दूधवाला अपना साइकल रोककर उनके पास पहुँचा ।

"क्या हुआ माँ?"उसने पूछा । कार उस बुढ़िये को झटका देते हुए उसने देखा था ।

माँ ऐसी पुकार सुनकर बुढ़िया को लगी कि उसको थोड़ी और शक्ति मिली है। कारण कुछ वर्ष हुए उनको उसी तरह कोई संबोधन करके। पाँच-छह वर्षों के पहले अपनी संतानों ने माँ-माँ ऐसी कितनी बार पुकारा है! तब वे मुझे छोड़कर परदेस नहीं गए थे । तब मैं भी प्यार का पात्र थी .....

कितने कपड़े धो चुके हैं ! अपने हाथों से। कितनी बार खाना बनाकर खिला चुका है ! अब करने को बाकी कुछ नहीं, ऐसी स्थिति बन गई है। बेटे पत्नियों को लेकर देश छोड़ भी गए हैं!

"क्या कहती हैं मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है ।"दूधवाला उनकी ओर सिर झुकाकर बोला । उसने उन्हें धीरे से सहारा देकर बिठाया । उनके दायाँ पाँव से तब भी खून बह रहा था । लाल और गरम खून।खून को तो बुढ़ापा नहीं है।उसमें बुढ़ापे का लक्षण दिखाई नहीं देता है।

तभी एक पुलिसवाला पुस्तकें लेकर वहाँ प्रत्यक्ष हुआ।

क्या तू ने इनको गिरा दिया? उसने दूधवाले से पूछा।

'यह कैसा पागलपन है!'दूधवाले ने कहा: 'इन्हें एक काली विलायती कार ने गिरा दिया था। वह बिना रुके चली गई । मैं किसलिए इस बुढ़िया को गिरा दूँ ? क्या मुझे आँखें नहीं है क्या? क्या मेरे सिर को पागलपन है?'

'हाँ,हाँ। तो तू ही इस मुकदमे का चश्मदीद गवाह है। पुलिसवाले ने कहा: 'कहो, क्या नाम है?'

'मेरा नाम भोलेराम है।'

'पिता का नाम?'

'पिता का नाम मोतीराम है।'

'आपका स्वदेश कहाँ है?'

'इमांगंज।'

'इमांगंज? वह कहाँ है?'

'यह कैसा पागलपन है!'दूधवाला बेसब्री से बोला: 'इमांगंज तो गया के पास है ना पुलिसवाले इतना भी नहीं जानते?'

'हाय? मैं उठ नहीं सकती ।'बुढ़िया ने शिकायत की।

'क्या, इन्हें किसी डॉक्टर के पास पहुँचा दूँ?'दूधवाले ने कहा। 'तुम्हारे सवाल और जवाब फिर हो जाएँ । इनके पैरों से खून बहते क्या तुम नहीं देखते?'

'सवालों को पूरा किए बिना मैं इस मुकदमे का रिपोर्ट कैसे करूँ ?'पुलिसवाले ने पूछा।

'रिपोर्ट करेंगे! क्या आपकी भी एक माँ नहीं है क्या ! तुम्हारा उद्देश्य इस बुढ़िया को सडक पर ही लिटाकर मार डालने का है! हट जाओ।मैं एक टाक्सि बुला लूँ।'

'हाय मैं उठ नहीं सकती।'बुढ़िया ने शिकायत की।

दूधवाले ने एक टाक्सि रोककर, उसमें बुढ़िया को टेककर बिढ़ाया।

'डॉक्टर के पास ।'उसने टाक्सि ड्राइवर से बोला: 'पैर से खून बह रहा है उसे रुकने दे।यह शुरू हुए पाँव घंटे हो गया ।'

'क्या यह आपकी माँ है ?'टाक्सि ड्राइवर ने पूछा।

'मेरी माँ नहीं है।'दूधवाले ने कहा: "यदि यह मेरी माँ होती तो मैं उन्हें इस बुढ़ापे में सब्जी खरीदने बाहर नहीं जाने देता।इन्हें मैं पहली बार देख रहा हूँ।एक काली विलायती कार ने उन्हें गिराकर पैर पिसाया है.....मुझे अनेक जगहों पर दूध पहुँचाना है।आपको मैं पैसा दूँगा। क्या इन्हें डॉक्टर के पास ले जाओगे?"

'पैसा नहीं चाहिए।मैं पहुँचा दूँगा।'टाक्सि ड्राइवर ने बोला।

उसने उस बुढ़िया को टेककर डॉक्टर के कमरे की ओर ले गया।

'इन्हें एक विलायती कार ने गिरा दिया।'ड्राइवर ने कहा: 'पैर पिस गया है।'

'क्या हुआ?'डॉक्टर ने पूछा।

'माँ, यहाँ लेटिए।'डॉक्टर ने उस बूढ़ी को चारपाई पर लिटाया।

पुन: 'माँ' , एेसी पुकार। बुढ़िया ने आँखें खोलकर चारों ओर देखा। डॉक्टर चोट लगे उस पैर की जाँच कर रहा था।

'माँ को दर्द लग रहा है क्या?'

बुढ़िया ने सोचा कि यही सवाल पहले कभी मैं ने सुना था।पहले कभी मैं सिरदर्द से लेटी थी तब दस साल का बेटा आकर उसका छोटा हाथ मेरे माथे पर रखकर पूछा: 'माँ को दर्द हो रहा

है क्या?'उसकी आँखें भर आई थी.....वह भी जल्द ही किसी और हो गया था! उसको देखकर ही कई साल हुए! देखें तो भी क्या मैं पहचान पाऊँगी?

उसने खून पोंछकर उस चोट पर पट्टी बाँधी।

'क्या बक रही हैं?'डॉक्टर ने पूछा: 'मेरी समझ में नहीं आता। दर्द है क्या?मैं अब ठीक कर दूँगा।'

'कहाँ रह रही हैं?'उसने पूछा।

'माँ , आपका घर कहाँ?'टाक्सि ड्राइवर ने पूछा।

'पहाड़गंज।'

'वहाँ आपकी शुश्रूषा करने केलिए बच्चे हैं क्या?'डॉक्टर ने पूछा।

बुढ़िया ने सिर हिलाया।

'मैं उन्हें बुलवाऊँ क्या?'उसने पूछा।

'नहीं, मैं चली जाऊँगी । मैं अब ठीक हो गई।'बुढ़िया बोली: 'उन्हें क्यों डराऊं?'

'मैं छोड़ दूँ क्या?'

'नहीं, मैं - अपनी गाड़ी में ले जाऊँगा।'टाक्सि ड्राइवर ने कहा।

उसने उन्हें फिर से सहारा देकर कार में बिढ़ाया।

'भिंड़ी सब नष्ट हो गई।'बुढ़िया ने फुसफुसाया।

'माँ को बच्चों के पास छोड़कर ही मैं जाऊँगा।'

पहाड़गंज में उनके दिखाए घर के सामने कार रोककर ड्राइवर ने कहा:

'उसकी ज़रूरत नहीं है,बेटा , 'बुढ़िया ने कहा : 'बच्चे तो वृथा इ़र जाएँगे। मेरा दर्द ठीक हो गया। मैं खुद जाऊँगी।'

वे अपने गर्दन में बाँधे धागे में लटकाए एक चाबी से दरवाज़ा खोलकर , अन्दर गई।

बुढ़िया ने कमरे को देखा । नहीं ! क्या मैं पानी रखना भी भूल गई ? सब्जी नहीं है ,अौर पानी भी नहीं है , आज मुझे भूखा ही रहना पड़ेगा ।

टाक्सि ड्राइवर वापस चला।

वे कोरे फर्श पर एक चटाई भी बिछाने की कोशिश किए बिना लेट गईं । झुलसाए पेड़ों की जड़ें , मिट्टी से उखडकर ऊपर की ओर उठते जैसे, वे अंगुलियाँ एक निश्चलता के साथ ऊपर की ओर मुड़कर रह गईं।

आँखों से आँसू युक्त एक गाठा पानी बहता रहा।

मैं सब कर चुकी हूँ। वे अपने आप से बोलीं। कितने कपड़े धो चुके! कितने खाने बनाकर खिलवाए। कितनी बार बिना सोए , बच्चों की शुश्रूषा की! अब वे सब बडे होकर पिता बन गए । अब मुझसे किसी को भी कोई ज़रूरत नहीं। काली कार वह जानती थी.....

'माँ को दर्द हो रहा है क्या?'दस साल का बेटा आँसू बहनेवाले चेहरे के साथ मुझसे ही वह सवाल पूछा था। तब वह मुझको प्यार करता था.....

बुढिया ने अचानक हँसना चाहा। अकारण एक आनंद!